ORIGINAL RESEARCH PAPER

History

स्वतन्त्रता संघर्ष में डा0 राजेन्द्र प्रसाद का योगदान

KEY WORDS:

डा0 बलकार सिंह सहायक प्रोफेसर (इतिहास विभाग) आई. जी. यू. मीरपूर रेवाड़ी, हरियाणा

ABSTRACT

डा0 राजेन्द्र प्रसाद का जन्म जीरादेई में 3 दिसम्बर 1984 को हुआ था। इनके पिता का नाम श्री महादेव सहाय था। महादेव सहाय की पॉच संतानों में सबसे छोटा राजेन्द्र पसाद जी थे। डा0 राजेन्द्र प्रसाद के वंशज गॉव अमोढा उत्तर प्रदेश के मूल निवासी थे। डा0 राजेन्द्र प्रसाद ने कांग्रेस अध्यक्ष पद पर रहते हुये बहुत महत्वपूर्ण कार्य करते हुये। देश की स्वतन्त्रता में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

राजेन्द्र प्रसादः–

डा0 राजेन्द्र प्रसाद का जन्म जीरादेई में 3 दिसम्बर 1984 को हुआ था। इनके पिता का नाम श्री महादेव सहाय था। महादेव साहय की पॉच संतानों में सबसे छोटा राजेन्द्र पसाद जी थे।[1] डा0 राजेन्द्र प्रसाद के वंशज गॉव अमोढा उत्तर प्रदेश के मूल निवासी थे। अमोढ़ा गॉव में कायस्थों की संख्या सबसे अधिक थी। यहा से एक परिवार काम की तलाश में जीरादेई बिहार में चला गया था। जिसे डा0 राजेन्द्र प्रसाद का सम्बंध बिहार से माना जाता है।[2] छः वर्ष की आयु में राजेन्द्र प्रसाद को पढ़ने के लिए मौलवी साहब के पास भेजा गया। इसी समय में डा0 राजेन्द्र प्रसाद ने कैथी लिखना सीखा। मौलवी से फारसी की पढाई सीखी।[3] पॉचवी कक्षा की पढाई के समय ही डा0 राजेन्द्र प्रसाद जी की शादी कर दी गई थी। पॉचवी कक्षा में अव्वल रहने के कारण डा0 राजेन्द्र प्रसाद का छठी कक्षा से आठवीं कक्षा में दाखिला कर दिया गया।[4] स्कूल की पढाई पूरी करने के पश्चात् पढाई को निरन्तर आगे बढाना चाहते थे। उस समय यूनीवर्सिटी की परीक्षा में शामिल होने व दाखिले के लिए स्कूल परीक्षा पास पहले करनी पड़ती थी। इस परीक्षा में डा0 राजेन्द्र प्रसाद न की सफल हुये बल्कि प्रथम स्थान प्राप्त किया।[5] राजेन्द्र बाबू ने अपनी आगे की पढ़ाई के लिए इतिहास व इक्नोमिक्स विशयों का चयन किया। इन दोनों विषयों में आनर्स किया। इन विषयों मे अच्छे अंक लेकर पास हुये। 'डोन सोसायटी छात्रवृत्ति के द्वारा डा0 राजेन्द्र प्रसाद को सम्मानित किया गया। यह सम्मान डा0 राजेन्द्र प्रसादको सर गुरूदास बनर्जी द्वारा प्राप्त हुआ था। जिसे पाकर डा0 राजेन्द्र प्रसाद बहुत गर्व महसूस करते थे।[6]

जिस समय डा0 राजेन्द्र प्रसाद बी0 ए की पढाई कर रहे थे। उस समय डॉन सोसायटी द्वारा चलाये गये स्वदेशी आन्दोलन से वे बहुत प्रभावित हुये। उनके मन में देश के प्रति कुछ करने का जज्बा उत्पन्न हुआ। इन दिनों बी0 ए की पढाई के उपरान्त डिप्टी–मजिस्ट्रेटी का पद मिल जाता था। लेकिन डा0 राजेन्द्र प्रसाद ने इस पद को देश की सेवा करने के लिए ठुकरा दिया था। डा0 साहब के पिता जी चाहते थे कि ये एक अच्छा वकील बनें। लेकिन डा0 राजेन्द्र बाबू ने एम0 ए0 बी0 एल0 की पढ़ाई करने के लिए कलकत्ता विश्वविद्यालय में दाखिला लिया। यहॉ रहकर उनका मन 1898 में विदेश जाकर आई0 सी0 एस0 करने का हुआ। पर पिता जी की सेहत खराब होने के कारण विदेश नहीं जा सके।[7] डा0 राजेन्द्र प्रसाद जी ने भारत में रहकर ही वैधनाथ बाबू के कहने पर एम0 एल0 की परीक्षा देने के लिए बहुत अधिक कठोर परिश्रम किया। यह परीक्षा दिसम्बर 1915 को होनी थी। जिसके लिए डा0 राजेन्द्र प्रसाद जी पन्द्रह–सोलह घंटो तक पढ़ा करते थे।[8] राजेन्द्र बाबू व वैधनाथ बाबू ने पटना में परीक्षा दी। दोनो ही इस परीक्षा में पास होने वाले बिहार राज्य के प्रथम छात्र थे। इस परीक्षा के बाद एक मौखिक निबन्ध की परीक्षा भी देनी पड़ती थी। जिसके पास होने के बाद डी0एल0 की उपाधि मिलती थी। इस प्रकार राजेन्द्र प्रसाद को कानून में डी0 एल0 की उपाधि मिली।[9]

स्वतन्त्रता संघर्श :–

डा0 राजेन्द्र प्रसाद ने डॉन सोसायटी द्वारा चलाये गये स्वदेशी आन्दोलन से प्रभावित होकर देश को आजाद करवाने के लिए व राष्ट्र का निर्माण करने के लिए अन्य नेताओं के साथ मिलकर कार्य किया। 1907 से जब कांग्रेस दो भागों में बट चुकी थी। उस समय कांग्रेस के प्रति लोगो का रूझान दिन–प्रतिदिन कम होता जा रहा था। 1912 में जब कांग्रेस का अधिवेशन हुआ उस समय प्रतिनिधियों की संख्या बहुत कम रह गई थी। सब लोग राष्ट्रहित में दोनों दलो को एक करना चाहते थे। डा0 राजेन्द्र प्रसाद ने इन दोनों दलों को एक करने में भी अपनी भूमिका निभाई। इस समय गॉधी जी 1915 में दक्षिण अफ्रीका से लौटकर भारत आये थे। वे इस समय देश भ्रमण पर थे। 1916 को लखनऊ मे कांग्रेस का बड़ा अधिवेशन हुआ। जिसमें दोनों दल एक मंच पर एकत्रित हुये। जिसे कांग्रेस मजबूत हुई इसी अधिवेशन में गॉधी जी को मंत्री पद देने की कोशिश की गई गांधी जी ने इसके लिए मना कर दिया। जिसके कारण अधिवेशन में बैठे डा0 राजेन्द्र प्रसाद बहुत प्रभावित हुये।[10] गॉधी जी अपने देश भ्रमण दौरे को आगे बढ़ाना चाहते थे। वे चम्पारन जाना चाहते थे और रियासतों से मिलकर उनके बारे में जानना चाहते थे। उसी समय वहॉ के तात्कालिक क्लेक्टर ने उन्हें जिला छोड़कर जाने के आदेश दिये। पर गॉधी जी ने वहॉ से जाना उचित नहीं समझा। गॉधी जी को गिरफ्तार कर लिया गया। गॉधी जी ने तार द्वारा कचहरी में डा0 राजेन्द्र के पास अपनी बाते पहुचाई। यह वह समय था। जब डा0 राजेन्द्र प्रसाद सीधे तौर पर गॉधी जी के सम्पर्क मे आये।[11] राजेन्द्र प्रसाद गांधी जी के विचारों से प्रभावित होकर उनके अनुयायी बन गये थे। उन्होंने अपना पूरा जीवन देश को स्वतन्त्र करवाने के लिए समर्पित कर दिया। गॉधी के रूप में देश व डा0 राजेन्द्र प्रसाद को एक अंहिसा व असहयोग से स्वाधीनता संग्राम को आगे बढ़ाने वाला शस्त्र मिला। यह पहला समय था। जब इतनी बहादूरी व बड़ी संख्या में निशस्त्र लोग अंग्रेंजो की दमनकारी नीति के खिलाफ सड़को पर उतरे। मार्च सन् 1919 में रॉलेट एक्ट पास कर ब्रिटिश शासन ने लोगों को बिना मुकदमों की सुनवाई के जेलों मे डालना शुरू कर दिया। 6 अप्रैल सन् 1919 को गॉधी जी ने हड़ताल का आग्रह किया था। जिस पर टिप्पणी करते हुये डा0 राजेन्द्र प्रसाद जी ने कहॉ था ''सारा काम ठप हो गया है। यहॉ तक किसानों ने अपने हल भी रख दियें है। जिसें अंग्रेजी शासन में हड़कंप मच गया था।'' इसी तरह की जनसभा 13 अप्रैल 1919 में जलियॉवाला बाग अमृतसर में हो रही थी। इस जनसभा मे निहत्थे लोगो पर जरनल डायर ने गोलिया चलवाई व बहुत से लोग मारे गयो। लोगों में अंसतोश लगातार बढ़ रहा था लेकिन गॉधी जी व डा0 राजेन्द्र प्रसाद के सहयोग से लगातार अंहिसा के रास्ते पर स्वतन्त्रता प्राप्त करने की प्रेरणा मिलती रही।[12] डा0 राजेन्द्र प्रसाद की देश के प्रति सम्पूर्ण, संगठन–शक्ति, ईमानदारी, कर्मठता का देश की जनता पर इतना अधिक प्रभाव पड़ता जा रहा था कि उनकी गणनाा देश के चोटी के नेताओं मे होने लगी। इसमें कोई भी हैरानी की बात नही है। जब सन् 1934 में कांग्रेस का अधिवेशन बम्बई में करवाने का निश्चय हुआ तो स्वयं गॉधी जी सहित अन्य कांग्रेस समिति ने एकमत से प्रस्ताव को पारित किया। डा0 राजेन्द्र प्रसाद को कांग्रेस का अध्यक्ष चुन लिया गया। लेकिन जून 1934 मे डा0 साहब के परिवार की मुख्य धुरी बड़े भाई श्री महेन्द्र प्रसाद की मृत्यु हो गई थी। परिवार की हर तरह की जिम्मेवारी डा0 राजेन्द्र प्रसाद पर आ गई। आर्थिक स्थिति भी दिन–प्रतिदिन कमजोर होती गई। लेकिन सेठ जमनालाल ने इस कर्ज मुक्ति में डा0 राजेन्द्र प्रसाद जी का सहयोग दिया।[13]

1934 में बम्बई कांग्रेस का अधिवेशन डा0 राजेन्द्र प्रसाद की अध्यक्षता में बहुत ही सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। अपने इस दो वर्शो के कार्य काल में सबसे महत्वपूर्ण कार्य हिन्दू, मुसलमानों में एकता व एकमंच पर एकत्रित करने के लिए बहुत अधिक प्रयास किये गये। इसी कार्य के लिए उन्होंने श्री जिन्ना से दिल्ली में बातचीत की लेकिन इस बातचीत के द्वारा हिन्दू व मुसलमानों को एकमंच पर लगाकर अंग्रेजो के प्रति मिलकर संघर्ष करने वाली बात में सफलता नही मिली। लेकिन डा0 राजेन्द्र एक मात्र ऐसे नेता थे। जिनसे जिन्ना ने बातचीत करने पर अपनी सहमति दी थी। इसी समय के दौरान डा0 राजेन्द्र प्रसाद ने कांग्रेस का इतिहास लिखवाने का कार्य किया। पट्‌भि सीतारमैरया द्वारा मूल अंग्रेजी में लिखे गये इस इतिहास का स्वयं सम्पादन डा0 राजेन्द्र प्रसाद द्वारा किया गया। कुछ समय पश्चात् इसका हिन्दी, मराठी, कन्नड़, तेलगू और उर्दू भाषा में भी प्रकाशन किया गया। डा0 राजेन्द्र प्रसाद ने स्वयं इस समय के दौरान सभी प्रान्तों का दौरा किया। सभी प्रान्तों का एक मंच पर इक्ट्ठा करने का प्रयास किया। कांग्रेस को मजबूत बनाने में अपनी पूरी शक्ति लगाई ताकि अंग्रेजो पर दबाव बनाया जा सके। वे अपने इस कार्य में काफी हद तक सफल भी रहे।[14] कुछ समय बाद अप्रैल 1939 में कलकत्ता कांग्रेस अधिवेशन बुलाया गयां जिसमे सुभाष बाबू दोबारा कांग्रेस अध्यक्ष बनना चाहते थे। लेकिन विरोध के बाद सुभाष बाबू को अध्यक्ष पद नही दिया गया। डा0 राजेन्द्र प्रसाद की तरफ लोगों का रूझान होने लगा कि इन्हें ही दोबारा से कांग्रेस अध्यक्ष का पद दिया जाये लेकिन डा0 राजेन्द्र प्रसाद ने पद लेने से बिल्कुल मना कर दिया था लेकिन गॉधी जी के दबाव में इन्हे दोबारा पद लेना पड़ा।

24 जून 1939 को बम्बई में अखिल भारतीय कांग्रेस की एक मिटिंग डा0 राजेन्द्र प्रसाद की अध्यक्षता में बुलाई गई थी। जिसमें बहुत सारी बातों पर चर्चा हुई। इन चर्चा के साथ–साथ डा0 राजेन्द्र प्रसाद को स्वयं कुछ आंशका हुई कि दूसरे विश्वयुद्ध के आसार दिन–प्रतिदिन बढते जा रहे है। डा0 राजेन्द्र प्रसाद की आंशका उस समय सच्च हुई। जब 3 दिसम्बर सन् 1939 को इग्लैंड ने जर्मनी के खिलाफ युद्ध आरम्भ किया था। इस समय अंग्रेजी वायसराय की ओर से एक प्रैस नोट प्रकाशित किया गया कि इस संकट की घड़ी में भारत के लोगो ने इंग्लैड का साथ बिना शर्त के देना चाहिए। कांग्रेस की तरफ से भी इसके जवाब में प्रश्न पूछा गया कि क्या इसके बाद भारत को आजाद कर दिया जायेगा। डा0 राजेन्द्र प्रसाद ने सबसे पहले गॉधी जी फिर जवाहरलाल नेहरू व अन्त में जिन्ना से मिलकर वायसराय से मिलने का समय लिया। वायसराय ने सभी बातों को सुनकर सभी दलों की संतुष्टि के लिए सुझाव दिया कि वायसराय की कार्यकारणी में सदस्यों की संख्या बढ़ा दी जायेगी। ये सभी सदस्य भारतीय ही होगे। उन्हें अपनी बात रखने का अधिकार दिया जायेगा। लेकिन अंतिम निर्णय वायसराय ही लेगा।[15] आम जन व कांग्रेस मानती थी कि हमें तत्काल अपनी स्वतन्त्रता व अधिकार मिल जाने चाहिये। इसके बाद भारतीय जन युद्ध में रूचि ले सकता था। द्वितीय विश्व युद्ध आरम्भ होने पर ब्रिटिश शासन ने विचार रखे कि ये प्रजातंत्र की रक्षा के विरूद्ध युद्ध है। इसके पश्चात् कांग्रेस ने शासन के ही

प्रश्नों का उठकर उत्तर पूछा कि यह प्रजातंत्र भारत सहित अन्य एशियाई देशो व अफ्रीका महाद्वीप में दलित व रंगभेद का शिकार हुये सभी लोगो के लिये है या केवल अंग्रेजी तथा अन्य यूरोपियन वासियों के लिए ही है। वायसराय से पूछे गये डा0 राजेन्द्र प्रसाद की अध्यक्षता में प्रश्नों का कोई सन्तुष्टि भरा जवाब नही मिला। वायसराय की बातों से असन्तुश्ट होकर अक्टूबर 1939 को वर्धा में काग्रेस की बैठक हुई। जिसमें डा0 राजेन्द्र प्रसाद ने अपनी सरकार के प्रति नाराजगी जताते हुये सभी मुद्दो के बारे में बताया। विश्वयुद्ध अपनी गति पकड़ता जा रहा था। अंग्रेजी वायसराय ने बिना प्रान्तीय शासको व कांग्रेंस के साथ चर्चा किये। भारत की युद्ध मे भाग लेने की घोशणा कर दी।[16] इसके बाद कांग्रेस ने प्रस्ताव निकाला की, भारत के युद्ध में शामिल होने के पश्चात। युद्ध समाप्ति पर देश को आजाद कर दिया जायेगा?

इसके बाद वायसराय ने सर्वलीय बैठक बुलाई जिसमें 52 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। 7 अक्टूबर 1939 को ब्रिटिश सरकार की ओर से घोषणा की गई कि युद्ध की समाप्ति के बाद सभी देशी राज्यो के शासकों से मिलकर 1935 के अधिनियम में आवश्यक परिवर्तन किये जायेगे। लेकिन इस समय कांग्रेस की शीघ्रसत्ता हस्तांतरण की मांग सही नही है। इस घोषणा से भारतीयों को बहुत निराशा हुई जिस पर डा0 राजेन्द्र प्रसाद जी ने कहॉ ''अंग्रेजी सरकार की कमियों और भारत के प्रति उनके अन्यायों को स्मरण करते हुए भी इस समय जर्मनी के व्यवहार से चकित रह गए थे, फिर भी यह कहना कि जैसा कि अंग्रेजों के अनेक पिटठू कहते है कि कांग्रेस के लोग इंग्लैड की विवशता को अनुभव करते हुए प्रतिशोधात्मक भावना से अवसर का लाभ उठाान चाहते है, ऐसा मानना सर्वथा असत्य है। यद्यपि हमें अंग्रेजो से हजारों शिकायते हैं, तथापि युद्ध के आरम्भ से किसी भी कांग्रेसी के हृदय में ब्रिटेन के प्रति कटुता का भाव नहीं था और उसकी सहायता करना अपना कर्तव्य समझते थे। इसके लिए अपने अधिकारों की भी उपेक्षा थी। ऐसा किए बिना जनता में उत्साह का संचार करना संभव नहीं था। वायसराय की घोषणा ने हमे निराश कर दिया।''

डा0 राजेन्द्र प्रसाद ने कांग्रेस अध्यक्ष पद पर रहते हुये बहुत महत्वपूर्ण कार्य करते हुये। देश की स्वतन्त्रता में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।[17]

1. आत्म कथा (संक्षिप्त) डा0 राजेन्द्र प्रसाद (प्रभात प्रकाशन दिल्ली) पृ0 स0 22–23
2. डा0 राजेन्द्र प्रसाद–सादगी, मानवता, एकता और अंहिसा के पूजारी स्वतन्त्रता भारत के प्रथम राष्ट्रपति (मनोज पब्लिकेशन) पृ0 स0 – 13
3. आत्म कथा (संक्षिप्त) डा0 राजेन्द्र प्रसाद (प्रभात प्रकाशन दिल्ली) पृ0 स0 22–23
4. भारत के प्रथम राष्ट्रपति, डा0 राजेन्द्र प्रसाद–अजय कुमार पृ0 स0 – 15
5. आत्म कथा (संक्षिप्त) राजेन्द्र प्रसाद–प्रभात प्रकाशन दिल्ली) पृ0 स0 40–41
6. देशरत्न राजेन्द्र प्रसाद–(संक्षिप्त जीवनी)–तारा सिंहा पृ0 स0 11–12
7. आत्म कथा (संक्षिप्त) पृ0 स0 71–72
8. आत्मकथा सस्ता साहित्य मण्डल दिल्ली, पृ0 स0 – 380
9. एक युग स्मरण, पृ0 स0 – 273
10. देशरत्न राजेन्द्र प्रसाद–मैथली शरण गुप्त पृ0 स0 – 299
11. एक युग स्मरण पृ0 स0 – 261
12. भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा0 राजेन्द्र प्रसाद– अजय कुमार, पृ0 स0 – 111
13. राजेन्द्र प्रसाद–आत्मकथा–तारासिन्हा, पृ0 स0 16–17
14. देशरत्न राजेन्द्र प्रसाद–मैथली शरण गुप्त, पृ0 स0 –288
15. देशरत्न राजेन्द्र प्रसाद संक्षिप्त जीवनी–तारा सिन्हा पृ0 स0 –137
16. आत्मकथा–राजेन्द्र प्रसाद, पृ0 स0 150
17. डा0 राजेन्द्र प्रसाद का हिन्दू कोड बिल, पृ0 स0 135